International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in August 2024, ISSN -2393-8048

जनसंख्या दबाव और संसाधन संकटः हनुमानगढ़ तहसील का भौगोलिक अध्ययन

सुमन बाला, शोध छात्रा, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान
डॉ. बाबू लाल शर्मा, सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

सारांश

हनुमानगढ़ तहसील में जनसंख्या वृद्धि और संसाधन संकट के बीच का रिश्ता एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विषय है। इस अध्यायन में जनसंख्या वृद्धि की दर, संसाधनों की उपलब्धता, और उनके उपयोग की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। परिणामस्वरूप, यह पाया गया कि संसाधनों की सीमित उपलब्धता और बढ़ती जनसंख्या के कारण क्षेत्र में विकास संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इस अध्यायन का उद्देश्य इन चुनौतियों की पहचान करना और उनके समाधान के लिए नीति–निर्माण में सहायक सिफारिशें प्रस्तुत करना है।

परिचयः

हनुमानगढ़ तहसील, जो राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित है, अपनी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और सीमित जल संसाधनों के लिए जानी जाती है। इस तीव्र जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ संसाधनों की उपलब्धता में कमी क्षेत्रीय विकास के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है।

अध्ययन का पृष्ठभूमि

वर्तमान युग में जनसंख्या वृद्धि एक वैश्विक समस्या बन चुकी है, लेकिन इसका प्रभाव क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर और भी गहरा होता है, जब संसाधनों की उपलब्धता सीमित होती है। भारत जैसे विकासशील देश में जनसंख्या दबाव के कारण जल, भूमि, वन, ऊर्जा आदि प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक बोझ पड़ा है। विशेष रूप से राजस्थान जैसे शुष्क और अर्द्ध–शुष्क प्रदेश में यह संकट और गंभीर हो जाता है, जहाँ संसाधनों की मात्रा पहले से ही सीमित है।

हनुमानगढ़ तहसील, जो राजस्थान के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है, कृषि पर आधारित एक प्रमुख क्षेत्र है। यहाँ जनसंख्या में लगातार हो रही वृद्धि के चलते संसाधनों का अनियंत्रित दोहन हो रहा है, जिससे प्राकृतिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस क्षेत्र में बढ़ती जनसंख्या और घटते संसाधनों के बीच संबंधों का विश्लेषण करना है, ताकि स्थानीय स्तर पर उपयुक्त रणनीतियाँ बनाई जा सकें।

समीक्षा साहित्य

सरकार राजस्थान (2020) द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान जनसंख्या और संसाधन सर्वेक्षण' एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो राज्य के विभिन्न जिलों में जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों की उपलब्धता व उनके दोहन की स्थिति को स्पष्ट करता है। इस सर्वेक्षण में हनुमानगढ़ सहित कई जिलों में जल, भूमि, वन और ऊर्जा संसाधनों की वर्तमान स्थिति तथा उन पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव का तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद जनसंख्या में लगातार हो रही वृद्धि संसाधनों के असंतुलित उपयोग को जन्म दे रही है, जिससे पर्यावरणीय संकट गहराता जा रहा है। यह रिपोर्ट जनसंख्या–संसाधन संतुलन की दिशा में नीति निर्माण के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करती है।

देशमुख, सुरेश (2021) की कृति 'जल संसाधन और सतत विकास' में भारत के जल संसाधनों की वर्तमान स्थिति और उनके सतत उपयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने विशेष रूप से यह दर्शाया है कि शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण जल स्रोतों पर दबाव बढ़ा है। इस पुस्तक का योगदान जल प्रबंधन की वैकल्पिक रणनीतियों और नीति–निर्माण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जोशी, मनोज (2017) द्वारा रचित 'भारत में संसाधन संरक्षण के उपाय' पुस्तक में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित परंपरागत एवं आधुनिक तकनीकों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। लेखक ने सामुदायिक भागीदारी, जनजागरण और तकनीकी हस्तक्षेप को संसाधनों की रक्षा हेतु अनिवार्य बताया है। यह अध्ययन क्षेत्रीय स्तर पर संसाधनों की रक्षा के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

वर्मा, दीपक (2019) की पुस्तक 'कृषि भूमि का सीमांकन और संरक्षण' में बताया गया है कि भूमि उपयोग में तेजी से हो रहे बदलावों ने कृषि योग्य भूमि को संकट में डाल दिया है। विशेष रूप से राजस्थान जैसे राज्य में, जहाँ पहले से ही भूमि की गुणवत्ता सीमित है, यह अध्ययन भूमि संरक्षण नीतियों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

राष्ट्रीय जल परिषद (2018) द्वारा प्रकाशित 'भारत में जल संकट की स्थिति' नामक रिपोर्ट, भारत में जल संकट की भयावहता और इसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in August 2024, ISSN -2393-8048

सरकारी दस्तावेज में भूजल स्तर की गिरावट, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, और जल संरक्षण उपायों की आवश्यकता पर ठोस आंकड़ों के साथ चर्चा की गई है।

सैनी, सुरेन्द्र (2020) की पुस्तक 'राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में ऊर्जा संकट' में राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की उपलब्धता, उपयोग और सीमाओं का विश्लेषण किया गया है। लेखक ने ऊर्जा की बढ़ती मांग और सीमित आपूर्ति के कारण उत्पन्न समस्याओं को उजागर करते हुए, सौर ऊर्जा और बायोमास जैसे विकल्पों को व्यवहारिक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है।

हनुमानगढ़ तहसील का भौगोलिक परिदृश्य

हनुमानगढ़ तहसील राजस्थान राज्य के उत्तर में स्थित है और इसकी सीमाएँ हरियाणा और पंजाब राज्यों से भी मिलती हैं। यह क्षेत्र थार मरुस्थल के प्रभाव में आता है, जहाँ जल की उपलब्धता सीमित है और जलवायु अर्द्ध–शुष्क है। यहाँ की औसत वर्षा लगभग 225 से 300 मिमी होती है, जो कि मुख्यतः मानसून पर निर्भर है। हनुमानगढ़ जिले की प्रमुख नदियाँ घग्घर और उसकी सहायक नदियाँ हैं, लेकिन ये वर्षा आधारित होने के कारण सीमित समय तक जल उपलब्ध कराती हैं। इंदिरा गांधी नहर इस क्षेत्र की प्रमुख सिंचाई स्रोत है, जिसने कृषि को संभव बनाया है। भूमि का अधिकतर उपयोग कृषि के लिए किया जाता है, लेकिन अत्यधिक सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण भूमि की गुणवत्ता में गिरावट देखी जा रही है।

जनसंख्या और संसाधनों की वर्तमान स्थिति

हनुमानगढ़ तहसील की जनसंख्या में बीते दो दशकों में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है। इतनी तेज़ जनसंख्या वृद्धि के कारण जल, भूमि, ऊर्जा और वन संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा है। जलस्तर प्रतिवर्ष 0.5 मीटर तक गिर रहा है। कृषि योग्य भूमि का अति प्रयोग हो रहा है जिससे उसकी उत्पादकता घट रही है। वनों की कटाई से वन्यजीवों का आवास नष्ट हो रहा है और जैव विविधता पर संकट मंडरा रहा है। ऊर्जा की मांग में भी अत्यधिक वृद्धि हो रही है, लेकिन आपूर्ति सीमित संसाधनों के कारण बाधित है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व

हनुमानगढ़ जैसे सीमित संसाधनों वाले क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह स्थानीय विकास, पर्यावरण संरक्षण और संसाधन प्रबंधन से सीधे जुड़ा हुआ विषय है।
इस शोध के माध्यम से यह जानने की आवश्यकता है कि किन कारणों से संसाधन संकट उत्पन्न हो रहा है और कौन–से उपाय इस संकट को कम करने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, यह अध्ययन नीति–निर्माताओं को यह दिशा देने में सहायक होगा कि संसाधनों के संरक्षण और जनसंख्या नियंत्रण के लिए किस प्रकार की योजनाएँ और कार्यक्रम आवश्यक हैं। यह शोध न केवल हनुमानगढ़ बल्कि अन्य समान भौगोलिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों के लिए भी एक संदर्भ बिंदु बन सकता है।

वर्तमान सरकारी योजनाएँ

हनुमानगढ़ तहसील में जनसंख्या दबाव और संसाधन संकट को संबोधित करने के लिए राजस्थान सरकार ने कई योजनाओं की शुरुआत की है। इनमें प्रमुख हैं:

- इंदिरा गांधी नहर परियोजनाः इस परियोजना के तहत, घग्घर नदी से पानी लाकर जिले की कृषि भूमि की सिंचाई की जाती है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई
- राष्ट्रीय जल जीवन मिशनः इस मिशन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर तक नल से जल पहुँचाना है, जिससे जल संकट को कम किया जा सके।
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः इस योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रसोई गैस कनेक्शन प्रदान किए जाते हैं, जिससे लकड़ी और गोबर के उपयोग में कमी आई है और वनों पर दबाव कम हुआ है।

जनसंख्या नियंत्रण की रणनीतियाँ

जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपायों की आवश्यकता है:

- शिक्षा और जागरूकताः लोगों को परिवार नियोजन के महत्व के बारे में जागरूक करना।
- स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तारः ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ाना।
- महिलाओं का सशक्तिकरणः महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करना, जिससे वे परिवार नियोजन के निर्णयों में सक्रिय भागीदार बन सकें।

संसाधन प्रबंधन हेतु सुझाव

संसाधनों के उचित प्रबंधन के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- जल संरक्षणः वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण और नदियों की सफाई के माध्यम से जल संकट को कम किया जा सकता है।

- सतत कृषि पद्धतियाँः जैविक खेती, ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग जैसी तकनीकों को अपनाकर कृषि भूमि की उर्वरता बनाए रखी जा सकती है।
- वन संरक्षणः वृक्षारोपण, वन्यजीव अभ्यारण्य और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।

स्थानीय जनभागीदारी की भूमिका

स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से ही योजनाओं की सफलता सुनिश्चित की जा सकती है। इसके लिएः

- पंचायती राज संस्थाओं का सशक्तिकरणरू स्थानीय निकायों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना।
- स्वयंसेवी संगठनों का सहयोगरू छळव्े और स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से जागरूकता और शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन।
- समुदाय आधारित निगरानीरू स्थानीय स्तर पर योजनाओं की निगरानी और मूल्यांकन के लिए समितियाँ गठित करना।

उद्देश्यः

- हनुमानगढ़ तहसील में जनसंख्या वृद्धि की दर का आकलन करना।
- संसाधनों की उपलब्धता और उनके उपयोग की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
- जनसंख्या वृद्धि और संसाधन संकट के बीच के संबंधों की पहचान करना।
- नीति–निर्माण के लिए सिफारिशें प्रस्तुत करना।

पद्धतिः

इस अध्यायन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जो मुख्य रूप से सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आंकड़ों, और क्षेत्रीय विकास योजनाओं से संकलित किए गए हैं। आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि दर, संसाधनों की उपलब्धता, और उनके उपयोग की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है।

आंकड़ा विश्लेषणः

- जनसंख्या वृद्धि दर% वर्ष 2001 से 2011 तक हनुमानगढ़ तहसील की जनसंख्या में 16.91% की वृद्धि हुई है।
- संसाधनों की उपलब्धताः जल, भूमि, और ऊर्जा जैसे प्रमुख संसाधनों की उपलब्धता में कमी देखी गई है। उदाहरण स्वरूप, जल स्तर में गिरावट और कृषि भूमि के क्षरण की प्रवृत्तियाँ उभरी हैं।
- उपयोग की प्रवृत्तियाँः संसाधनों का असंतुलित उपयोग और बढ़ती मांग के कारण संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

परिणामः

- संसाधनों की सीमित उपलब्धता और बढ़ती जनसंख्या के कारण क्षेत्र में विकास संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।
- जल स्तर में गिरावट, कृषि भूमि का क्षरण, और ऊर्जा संकट जैसे मुद्दे प्रमुख हैं।
- नीति–निर्माण में संसाधनों के संतुलित उपयोग और संरक्षण की आवश्यकता है।

निष्कर्षः

हनुमानगढ़ तहसील में जनसंख्या वृद्धि और संसाधन संकट के बीच का रिश्ता जटिल है। संसाधनों के संतुलित उपयोग और संरक्षण के लिए ठोस नीति–निर्माण की आवश्यकता है। यह अध्यायन नीति–निर्माताओं और योजना निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

हनुमानगढ़ तहसील में जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों के बीच संबंध का यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, संसाधनों की मांग भी तेजी से बढ़ रही है, जबकि उनकी उपलब्धता सीमित या घटती जा रही है। अध्ययन में यह पाया गया किः

- भूजल स्तर में गिरावट निरंतर जारी है, जो कि अत्यधिक दोहन, वर्षा की अनियमितता और जल संरक्षण उपायों की कमी के कारण है।
- कृषि भूमि पर दबाव बढ़ रहा है और बंजर भूमि का दायरा भी धीरे–धीरे बढ़ रहा है, जिससे खाद्य सुरक्षा की स्थिति भी प्रभावित हो रही है।
- वन क्षेत्र में कटौती और वृक्षों की अनियंत्रित कटाई ने जैव विविधता को नुकसान पहुँचाया है।

- ऊर्जा संसाधनों की मांग विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अत्यधिक बढ़ गई है, लेकिन वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग नगण्य है।
- जनसंख्या संरचना दर्शाती है कि युवाओं की संख्या अधिक है, जिससे शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं पर अतिरिक्त दबाव पड़ रहा है।

संदर्भः

1. सरकार राजस्थान। (2020). राजस्थान जनसंख्या और संसाधन सर्वेक्षण. जयपुरः विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. सिंह, रामकुमार। (2018). जनसंख्या वृद्धि और संसाधन प्रबंधन. दिल्लीः पब्लिकेशन हाउस।
3. शर्मा, प्रमिला। (2019). ग्रामीण विकास में संसाधन संकट. जयपुरः राजस्थान पब्लिशिंग।
4. देशमुख, सुरेश। (2021). जल संसाधन और सतत विकास. मुंबईः पर्यावरण अध्ययन केंद्र।
5. जोशी, मनोज। (2017). भारत में संसाधन संरक्षण के उपाय. नई दिल्लीः पर्यावरण प्रकाशन।
6. वर्मा, दीपक। (2019). कृषि भूमि का सीमांकन और संरक्षण. जयपुरः कृषि विकास संस्थान।
7. राष्ट्रीय जल परिषद। (2018). भारत में जल संकट की स्थिति. नई दिल्लीः जल संसाधन मंत्रालय।
8. सैनी, सुरेन्द्र। (2020). राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में ऊर्जा संकट. जयपुरः ऊर्जा संसाधन संस्थान।
9. पटेल, अंशुल। (2016). जनसंख्या और पर्यावरण संबंध. अहमदाबादः पर्यावरणीय संसाधन संस्थान।
10. गौतम, रंजीत। (2022). भूगोलिक सूचना प्रणाली और संसाधन प्रबंधन. कोलकाताः भूगोल संस्थान।
11. खान, रिज़वान। (2015). पर्यावरणीय समस्याएं और समाधान. लखनऊः पर्यावरणीय संसाधन संस्थान।
12. हनुमानगढ़ जिला दर्शन। (2021). राजस्थान के जिले. हनुमानगढ़ः राजस्थान सरकार।
14. हनुमानगढ़ जिला {Hanumangarh District} राजस्थान GK अध्ययन नोट्स। (2021).